टिटिहरी का जोडा और समुद्र का अभिमान

समुद्रतट के एक भाग मे एक टिटिहरी का जोडा रहता था । अंडे देने से पहले टिटिहरी ने अपने पति को किसी सुरक्षित प्रदेश की खोज करने के लिये कहा । टिटिहरे ने कहा - "यहा सभी स्थान पर्याप्त सुरक्षित है, तू चिन्ता न कर ।"
टिटिहरी - "समुद्र मे जब ज्वार आता है तो उसकी लहरे मतवाले हाथी को भी खीच कर ले जाती है, इसलिये हमे इन लहरों से दूर कोई स्थान देख के रखना चाहिये ।"
टिटिहरा - "समुद्र इतना दुःसाहसी नही है कि वह मेरी सन्तान को हानि पहुँचाये। वह मुझसे डरता है । इसलिये तू निःशंक होकर यही तट पर अंडे दे ।"
समुद्र ने टिटिहरे की ये बाते सुनली । उसने सोचा - "यह टिटिहरा बहुत अभिमानी है । आकाश की ओर टांगे करके भी यह इसीलिये सोता है कि इन टांगो पर गिरते हुए आकाश को थाम लेगा । इसके अभिमान का भंग होना चाहिये ।" यह सोचकर उसने ज्वार आने पर टिटिहरी के अंडो को लहरो मे बहा दिया ।
टिटिहरी जब दूसरे दिन आई तो अंडो को बहता देखकर रोती-बिलखति टिटिहरे से बोली - "मूर्ख ! मैने पहिले ही कहा था कि समुद्र की लहरे इन्हे बहा ले जायंगी। किन्तु तूने अभिमानवश मेरी बात पर ध्यान नही दिया । अपने प्रियजनो के कथन पर भी जो कान नही देता उसकी दुर्गति होती है।
इसके अतिरिक्त बुद्धिमानो मे भी वही बुद्धिमान सफल होते है जो बिना आई विपत्ति का पहले से ही उपाय सोचते है, और जिनकी बुद्धि तत्काल अपनी रक्षा का उपाय सोच लेती है । 'जो होगा, देखा जायगा' कहने वाले शीघ्र ही नष्ट हो जाते है ।"
यह बात सुनकर टिटिहरे ने टिटिहरी से कहा - मै 'यद्भविष्य' जैसा मूर्ख और निष्कर्म नही हूँ । मेरी बुद्धि का चमत्कार देखती जा, मै अभी अपनी चोच से पानी बाहिर निकाल कर समुद्र को सुखा देता हूँ ।"
टिटिहरी - "समुद्र के साथ तेरा बैर तुझे शोभा नहीं देता। इस पर क्रोध करने से

क्या लाभ? अपनी शक्ति देखकर ही हमे किसी से बैर करना चाहिये। नही तो आग मे जलने वाले पतंगे जैसी गति होगी ।"

टिटिहरा फिर भी अपनी चोच से समुद्र को सुखा डालने की डीगे मारता रहा। तब, टिटिहरी ने फिर उसे मना करते हुए कहा कि जिस समुद्र को गंगा-यमुना जैसि सैंकडो नदियां निरन्तर पानी से भर रही है उसे तू अपने बूंद-भर उठाने वाली चोच से कैसे खाली कर देगा ?

टिटिहरे को अपने अभिमान का पछतावा हुवा और टिटिहरी से क्षमा मागी, और कोई उपाय निकालने को कहा। तब, टिटिहरी ने कहा - "यदि हम अन्य पक्षियो की भी सलाह ले तो कोई ना कोई हल निकल आएगा। कई बार छोटे-२ प्राणी मिलकर अपने से बहुत बडे जीव को भी हरा देते है, जैसे चिडिया, कठफोडे और मेंढक ने मिलकर हाथी को मार दिया था ।

टिटिहरा - "अच्छी बात है। मैं अभी जाकर दूसरे पक्षियो की सहायता से समुद्र से अपने अंडो को कैसे वापिस लाऊ का उपाय ढूडकर लाता हुँ।"

यह कहकर उसने बगुले, सारस, मोर आदि अनेक पक्षियो को बुलाकर अपनी दुःख-कथा सुनाई । उन्होंने कहा - "हम तो अशक्त है, किन्तु हमारा मित्र गरुड अवश्य इस संबन्ध मे हमारी सहायता कर सकता है ।' तब सब पक्षी मिलकर गरुड के पस जाकर रोने और चिल्लाने लगे - "गरुड महाराज! आप के रहते हमारे पक्षिकुल पर समुद्र ने यह अत्याचार कर दिया । हम इसका बदला चाहते है। आज उसने टिटिहरी के अंडे नष्ट किये है, कल वह दूसरे पक्षियो के अंडो को बहा ले जायगा । इस अत्याचार की रोक-थाम होनी चाहिये। अन्यथा संपूर्ण पक्षिकुल नष्ट हो जायगा ।"

गरुड ने पक्षियों का रोना सुनकर उनकी सहायता करने का निश्चय किया। उसी समय उसके पास भगवान् विष्णु का दूत आया। उस दूत द्वारा भगवान विष्णु ने उसे सवारी के लिये बुलाया था। गरुड ने दूत से क्रोधपूर्वक कहा कि वह विष्णु भगवान को कह दे कि वह दूसरी सवारी का प्रबन्ध कर ले । दूत ने गरुड के क्रोध का कारण पूछा तो गरुड ने समुद्र के अत्याचार की कथा सुनाई ।

दूत के मुख से गरुड के क्रोध की कहानी सुनकर भगवान विष्णु स्वयं गरुड के घर गये। वहाँ पहुँचने पर गरुड ने प्रणामपूर्वक विनम्र शब्दो मे कहा - "भगवन्! आप के आश्रम का अभिमान करके समुद्र ने मेरे साथी पक्षियो के अंडो का अपहरण कर लिया है। इस तरह मुझे भी अपमानित किया है । मैं समुद्र से इस अपमान का बदला लेना चाहता हूँ ।"

भगवान विष्णु बोले - "गरुड! तुम्हारा क्रोध युक्तियुक् है । समुद्र को ऐसा काम नही करना चाहिये था । चलो, मैं अभी समुद्र से उन अंडो को वापिस लेकर टिटिहरी को दिलवा देता हूँ । उसके बाद हमे अमरावती जाना है ।"

तब भगवान ने अपने धनुष पर 'आग्नेय' बाण को चढाकर समुद्र से कहा -"दुष्ट! अभी उन सब अंडो को वापिस देदे, नही तो तुझे क्षण भर में सुखा दूंगा ।"

भगवान विष्णु के भय से समुद्र ने उसी क्षण अंडे वापिस दे दिये ।

सीख : अभिमान का सिर नीचा ।

टिटिहरी का घमंड और समुद्र का अभिमान

समुद्र तट के एक भाग में एक टिटिहरी का जोड़ा रहता था। अंडे देने से पहले टिटिहरी ने अपने पति को किसी सुरक्षित प्रदेश की खोज करने के लिये कहा। टिटिहरे ने कहा - "यहां सभी स्थान पर्याप्त सुरक्षित हैं, तू चिन्ता न कर।"

टिटिहरी - "समुद्र में जब ज्वार आता है तो उसकी लहरें मतवाले हाथी को भी खींच कर ले जाती हैं, इसलिये हमें इन लहरों से दूर कोई स्थान देख कर रखना चाहिये।"

टिटिहरा - "समुद्र इतना दुःसाहसी नहीं है कि वह मेरी सन्तान को हानि पहुँचाये। वह मुझसे डरता है। इसलिये तू निःशंक होकर यहीं तट पर अंडे दे।"

समुद्र ने टिटिहरे की ये बातें सुन लीं। उसने सोचा - "यह टिटिहरा बहुत अभिमानी है। आकाश की ओर टांगें करके भी यह इसीलिये सोता है कि इन टांगों पर गिरते हुए आकाश को थाम लेगा। इसके अभिमान का भंग होना चाहिये।" यह सोचकर उसने ज्वार आने पर टिटिहरी के अंडे को लहरों में बहा दिया।

टिटिहरी जब दूसरे दिन आई तो अंडों को बहता देखकर रोती-बिलखती टिटिहरे से बोली - "मूर्ख! मैंने पहले ही कहा था कि समुद्र की लहरें इन्हें बहा ले जायेंगी। किन्तु तूने अभिमानवश मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। अपने प्रियजनों के कथन पर भी जो कान नहीं देता उसकी दुर्गति होती है। उसके अतिरिक्त बुद्धिमान में भी वही बुद्धिमान सफल होते हैं जो बिना आई विपत्ति का पहले से ही उपाय सोचते हैं, और जिनकी बुद्धि तत्काल अपनी रक्षा का उपाय सोच लेती है। 'जो होगा, देखा जायगा' कहने वाले शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।"

यह बात सुनकर टिटिहरे ने टिटिहरी से कहा - मैं 'यद्भविष्य' जैसा मूर्ख और निष्कर्मा नहीं हूँ। मेरी बुद्धि का चमत्कार देखती जा, मैं अभी अपनी चोंच से पानी बाहिर निकाल कर समुद्र को सुखा देता हूँ।"

टिटिहरी - "समुद्र के साथ तेरा बैर तुझे शोभा नहीं देता। इस पर क्रोध करने से क्या लाभ? अपनी शक्ति देखकर ही हमें किसी से बैर करना चाहिये। नहीं तो आग में जलने वाले पतंगे जैसी गति होगी।"

टिटिहरा फिर भी अपनी चोंच से समुद्र को सुखा डालने की डींगे मारता रहा। तब, टिटिहरी ने फिर उसे मना करते हुए कहा कि जिस समुद्र को गंगा-यमुना जैसी सैकड़ों नदियां निरन्तर पानी से भर रही हैं उसे तू अपने बूंद-भर उठाने वाली चोंच से कैसे खाली कर देगा?

टिटिहरे को अपने अभिमान का पछतावा हुआ और टिटिहरी से क्षमा मांगी, और कोई उपाय निकालने को कहा। तब, टिटिहरी ने कहा - "यदि हम अन्य पक्षियों की भी सलाह लेते हैं तो कोई ना कोई हल निकल आयेगा। कई बार छोटे-छोटे प्राणी मिलकर अपने से बहुत बड़े जीव को भी हरा देते हैं, जैसे चिड़िया, कठफोड़े और मेंढक ने मिलकर हाथी को मार दिया था।

टिटिहरा - "अच्छी बात है। मैं भी दूसरे पक्षियों की सहायता से समुद्र से अपने अंडे को वापिस लाने का उपाय ढूंढकर लाता हूँ।"

यह कहकर उसने बगुले, सारस, मोर आदि अनेक पक्षियों को बुलाकर अपनी दुःख-कथा सुनाई। उन्होंने कहा - "हम तो असमर्थ हैं, किन्तु हमारा मित्र गरुड़ अवश्य ये इस संकट में हमारी सहायता कर सकता है।" तब सब पक्षी मिलकर गरुड़ के पास जाकर रोने और चिल्लाने लगे - "गरुड़ महाराज! आप के रहते हमारे पक्षिकुल पर समुद्र ने यह अत्याचार कर दिया। हम उसका बदला चाहते हैं। आज उसने टिटिहरी के अंडे नष्ट किये हैं, कल वह दूसरे पक्षियों के अंडे को बहा ले जायगा। इस अत्याचार की रोक-थाम होनी चाहिये। अन्यथा संपूर्ण पक्षिकुल नष्ट हो जायगा।"

गरुड़ ने पक्षियों को रोते सुनकर उनकी सहायता करने का निश्चय किया। उसी समय उसके पास भगवान् विष्णु का दूत आया। उस दूत द्वारा भगवान विष्णु ने उसे सवारी के लिए बुलाया था। गरुड़ ने दूत से क्रोधपूर्वक कहा कि वह विष्णु भगवान से कह दे कि वह दूसरी सवारी का प्रबन्ध कर ले। दूत ने गरुड़ के क्रोध का कारण पूछा तो गरुड़ ने समुद्र के अत्याचार की कथा सुनाई।

दूत के मुख से गरुड़ के क्रोध की कहानी सुनकर भगवान विष्णु स्वयं गरुड़ के घर गये। वहाँ पहुँचने पर गरुड़ ने प्रणामपूर्वक विनम्र स्वर में कहा - "भगवन्! आप के सेवक का अभिमान करके समुद्र ने मेरे साथी पक्षियों के अंडों का अपहरण कर लिया है। इस तरह मुझे भी अपमानित किया है। मैं समुद्र से इस अपमान का बदला लेना चाहता हूँ।"

भगवान विष्णु बोले - "गरुड़! तुम्हारा क्रोध युक्तियुक्त है। समुद्र को ऐसा काम नहीं करना चाहिए था। चल, मैं अभी समुद्र से उन अंडों को वापिस लेकर टिटिहरी को दिलवा देता हूँ। उसके बाद हम अमरावती चलना है।"

तब भगवान ने अपने धनुष पर 'आग्नेय' बाण को चढ़ाकर समुद्र से कहा -"दुष्ट! अभी उन सब अंडों को वापिस दे दे, नहीं तो तुझे क्षण भर में सुखा दूँगा।"

भगवान विष्णु के भय से समुद्र ने उसी क्षण अंडे वापिस दे दिये।

सीख : अभिमान का सिर नीचा।

अनुवाद – विष्णु कौल टला